THIRD GLOBAL SANSKRIT CONFERENCE 2024

ORGANIZING BY

MAHATMA GANDHI INSTITUTE MAURITIUS

IN COLLABORATION WITH

GLOBAL SANSKRIT FORUM, BHARAT

HYBRID MODE

TOPIC

THE ENDURING LEGACY OF SANSKRIT IN LANGUAGE AND CULTURE

भाषा और संस्कृति में संस्कृत की स्थायी विरासत

VENUE

SUBHRAHMANIA BHARATI LECTURE THEATRE, MGI, MOKA, MAURITIUS

05 & 06TH SEPTEMBER-2024

+91 8789507760 www.globalsanskritforum.com globalsanskritforum@gmail.com

वैश्विक संस्कृत मंच द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान

कोटा, (निसं)। वैश्विक संस्कृत मंच द्वारा द्वितीय वैश्विक संस्कृत सम्मेलन पुणे में 27-28 अक्टूबर को आयोजित किया गया। वैश्विक संस्कृत मंच राजस्थान प्रांत के प्रवक्ता डॉ भूपेंद्र कुमार राठौर ने बताया कि द्वि दिवसीय इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में दो अन्तरराष्ट्रिय सम्मान क्रमशरू प्रो.सत्यव्रत शास्त्री-अन्तरराष्ट्रिय स्मृति पुरस्कार-2023 को प्रो.पूर्णचन्द्र साहू एवं महामहोपाध्याय प्रो.पी.जी.लाव्हाले स्मृति पुरस्कार-2023को प्रो.भाग्यलता अशोक पाटसकर महोदया को सम्मानित मञ्च (विशेषत: प्रो. मुरली मनोहर पाठक गुरुजी) द्वारा संस्कृत के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान हेतु प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त मंच परिवार के लिए अथक परिश्रम कर मंच के उद्देश्यों को समाज के मध्य ले जाने हेतु मंच परिवार के तीन सदस्यों क्रमश: डॉ.सी.किशोर शास्त्री-उ.प्र.प्रान्त, डॉ.धनजंय कहालेकर-महाराष्ट्र एवं डॉ. जस्टिन जार्ज-केरल को 'राष्ट्रीय युवा-विद्वत् सम्मान- 2023 से सम्मानित किया गया।

(DEEMED TO BE UNIVERSITY)

संस्कृति और साहित्य

प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का सामूहिक विकास व परिष्कार संस्कृति का मूल उत्स है। निरन्तर सत्य की खोज करते हुए चिरन्तन सौन्दर्य और मानव प्रेम के मूल तत्वों को अनुप्राणित करते रहने से ही संस्कृति पुष्पित व पल्लवित होती है। सत्यं शिवं सुन्दरम् की अभिलाषा एवं संरक्षण ही संस्कृति का प्राण तत्व है। मन और आत्मा की तृप्ति के लिए मनुष्य जो विकास या उन्नति करता है, वह समग्र रूप से संस्कृति में अनुस्यूत है।

भारतीय संस्कृति विश्व वरेण्या संस्कृति कही जाती है। संस्कृति शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से क्तिन् प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है। संस्कृति शब्द का अभिप्राय प्रबोधित करना अथवा शिक्षित करना व परिमार्जन करने से है। संस्कृति व्यक्ति के सम्पूर्ण तत्वों का समाविष्ट रूप है।

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति व समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है, जिनके सहारे वह अपने आदर्शों व जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। भारतीय संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता सम्पूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र भावना में निहित है।

भारतीय संस्कृति विश्ववारा संस्कृति है "सा संस्कृतिः प्रथमा विश्ववारा" संस्कृति साहित्य पर आश्रित है- "संस्कृतिः संस्कृताश्रिता"। न केवल संस्कृत साहित्य में अपितु अन्य भाषाओं के साहित्य में सांस्कृतिक तत्वों को अनेकशः व्याख्यायित किया गया है।

आज विश्व के समक्ष सांस्कृतिक प्रदूषण एक विकराल समस्या के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। संस्कृत साहित्य के साथ ही अन्य भारतीय साहित्य में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक जीवन में सामञ्जस्य स्थापित करने की प्रबल कामना दृष्टिगोचर हो रही है। प्रस्तुत द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में संस्कृति और साहित्य विषय पर लोकोपयोगी विमर्श प्रस्तुत किया जाएगा।

विषय

संस्कृति और साहित्य

उपविषय

01- वैदिक संहिताओं में संस्कृति
02- उपनिषद् साहित्य में संस्कृति
03- पुराण साहित्य में संस्कृति
04- आर्ष काव्यों में संस्कृति
05- संस्कृत महाकाव्यों में संस्कृति
06- संस्कृत खण्ड काव्यों में संस्कृति
07- संस्कृत नाटकों में संस्कृति
08- आधुनिक संस्कृत साहित्य में संस्कृति
09- हिंदी साहित्य में संस्कृति
10- अंग्रेजी साहित्य में संस्कृति
11- पालि साहित्य में संस्कृति
12- ललित कला और संस्कृति
13- संस्कृति एवं मंच कला
14- संस्कृति एवं लोक कला
15- संस्कृति एवं संगीत कला